3

प्राथमिक शिक्षकों के समायोजन के लिए रक्षा युक्तियाँ

अलका त्रिपाठी*
अंजलि बाजपेयी**

शिक्षा का प्रथम स्तर प्राथमिक शिक्षा ही है। अतः इस नींव को सुदृढ़ करना, इसके उद्देश्य तथा भागीदारी को समझना शिक्षा से जुड़े हर व्यक्ति का कर्त्तव्य है। प्राथमिक शिक्षा से अभिप्राय शिक्षा काल के शुरूआती 5 से 7 वर्षों से है।

गांधी जी ने प्राथमिक शिक्षा की परिभाषा इस प्रकार व्यक्त की है — *"इसे बेसिक शिक्षा भी कहा जा सकता है। यह 7 से 14 वर्ष तक के बालकों के लिए अनिवार्य तथा निःशुल्क शिक्षा है तथा हस्तकला से संबंधित है। इससे छात्र आत्मनिर्भर बनता है तथा भावी भविष्य के व्यावहारिक हस्तकौशल को ग्रहण करता है।"*

प्राथमिक शिक्षा का किसी भी बच्चे के प्रारंभिक जीवन स्तर पर बहुत महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। प्राथमिक शिक्षा, शिक्षा का प्रारंभिक स्तर होता है जहाँ बच्चों के संज्ञानात्मक, संवेगात्मक व गत्यात्मक विकास की संतुलित रूप से शुरुआत होती है। प्राथमिक शिक्षा, बच्चों के लिखने और पढ़ने की क्षमता के विकास से जुड़ी हुई है व साथ ही साथ यह उनकी मातृभाषा का विकास करने में भी सहायक होती है। मुख्यतः प्राथमिक शिक्षा बच्चों को आगे के जीवन के लिए तैयार करने में पहली सीढ़ी का काम करती है। इस स्तर पर बच्चों के सर्वांगीण विकास की ज़िम्मेदारी जितनी उनके माता-पिता की होती है, उतनी ही उनके शिक्षकों की भी होती है।

बाद के स्तरों की तुलना में प्राथमिक स्तर पर किसी भी बच्चे को एक अच्छे शिक्षक के साथ व निर्देशन की ज़्यादा आवश्यकता होती है, जो कि उन्हें गुणात्मक शिक्षा देने के साथ ही साथ उनके चारित्रिक विकास में भी योगदान दे।

जहाँ तक हम एक शिक्षक की महत्ता का वर्णन करें तो यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा कि शिक्षक राष्ट्र का निर्माण करता है। अगर हम प्राथमिक शिक्षक की बात करें तो पूर्व के अध्ययनों व वर्तमान परिदृश्य को देखते हुए यह कह सकते हैं कि जो गुणवत्ता, मानसिक स्वास्थ्य इस स्तर के शिक्षक के लिए चाहिए,

**शोध छात्रा*, शिक्षा संकाय, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी
***प्रोफ़ेसर*, शिक्षा संकाय, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी

उसका आज के समय में अभाव पाया जा रहा है। इस अभाव का कारण कुछ उनकी स्वयं की कमियाँ हैं तो कुछ कमियाँ जहाँ वह कार्य कर रहे हैं, वहाँ के वातावरण उत्पन्न कर रहे हैं।

वातावरण/कार्य संबंधी बाधाएँ

1. **अभिभावकों की गैरज़िम्मेदारी** — प्राथमिक स्तर पर अभिभावक, विद्यार्थियों को शिक्षित करने में सहयोग नहीं दे पाते हैं। अभिभावकों को लगता है कि अगर हमने बच्चे को विद्यालय भेज दिया तो, पूरी शिक्षा की ज़िम्मेदारी सिर्फ़ शिक्षक की ही है। वे अपने बच्चे के शैक्षिक मुद्दों पर ज़्यादा ध्यान नहीं देते हैं, जो कि एक शिक्षक के शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति में बाधा उत्पन्न करता है।
2. **विद्यालयों में भौतिक सुविधाओं का अभाव**— प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में भौतिक साज–सज्जा का सामान्यतः अभाव पाया जाता है। वहाँ उचित कक्षा-कक्ष, शौचालय आदि की कमी रहती है, जो वहाँ के शिक्षक में एक निराशा उत्पन्न करती है (ए.आई. शामरी 1425)।

वैयक्तिक बाधाएँ

1. **शिक्षकों की अतियोग्यता** — अगर वर्तमान समय के प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के शिक्षा स्तर की बात करें, तो यह पाया जाएगा कि अधिकतम शिक्षकों का शिक्षा स्तर प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के लिए निर्धारित योग्यता से कहीं ज़्यादा है।

फ़ातिमा नासिर और हाला युसुफ़ ने इस विषय पर एक अध्ययन किया और बताया कि ज़्यादा शिक्षित प्राथमिक शिक्षकों में पाठ्यक्रम, विद्यार्थियों और भौतिक सुविधाओं से संबंधित अधिक समस्या होती है, जो उनके मानसिक स्वास्थ्य पर कुप्रभाव डालती है।

अगर एक शिक्षक का मानसिक स्वास्थ्य ही अच्छा नहीं होगा तो यह निश्चित है कि वह अपने विद्यार्थियों के साथ न्याय नहीं कर पाएगा और उसकी यह मानसिक अस्वस्थता हमारी युवा पीढ़ी पर विपरीत प्रभाव डालेगी।

डी. जी. र्‌यान्स ने बताया है कि — "Good Teachers those who are intelligent, skilful, sincere, understanding are a prime requisite for an enlightened productive and congenial society."

अगर हम उपरोक्त गुणों पर ध्यान दें व उनकी विवेचना करें तो हम पाएँगे कि ये सारे गुण किसी शिक्षक में तभी आ सकते हैं, जब उसका मानसिक स्वास्थ्य अच्छा हो। वर्तमान समय में इसमें से बहुत से गुण प्राथमिक शिक्षक में न के बराबर पाए जाते हैं जिसका कारण व परिणाम दोनों हैं, स्वयं को आंतरिक व बाह्य वातावरण में समायोजित ना कर पाना।

व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए स्वस्थ शरीर के साथ-साथ स्वस्थ मन का होना भी अत्यंत आवश्यक है। मानसिक उलझनों से ग्रस्त व्यक्ति प्रायः अपने दैनिक जीवन की विभिन्न परिस्थितियों से उचित समायोजन करने में कठिनाई का अनुभव करते हैं।

समायोजन वस्तुतः व्यक्त की आवश्यकताओं, अपेक्षाओं, तथा लक्ष्यों का उसकी परिस्थितियों से तालमेल का सूचक होता है।

Chapters- PS-April 2016.indd 19 27-07-2017 PM 12:51:57

एक सुसमायोजित व्यक्ति संवेगात्मक रूप से परिपक्व होता है। उसमें आत्मविश्वास, सहनशीलता, निर्णयक्षमता, संतुष्टि, स्वमूल्यांकन व धैर्य जैसे गुण विद्यमान रहते हैं। अगर व्यक्ति स्वयं को वातावरण के साथ समायोजित नहीं कर पा रहा है, तो उसमें तनाव उत्पन्न होता है।

तनाव को कम करके समायोजन करने की दो विधियाँ होती हैं जिनमें पहली विधि प्रत्यक्ष और दूसरी अप्रत्यक्ष विधि है। प्रत्यक्ष विधियाँ तब होती हैं जब व्यक्ति तनाव उत्पन्न करने वाली समस्या का हल निकाल ले व फिर उसे दूर कर ले। परंतु अगर किसी कारणवश व्यक्ति उस तनाव उत्पन्न करने वाली परिस्थिति को प्रत्यक्ष रूप से दूर नहीं कर पाता, तो वह उसे दूर करने के लिए अप्रत्यक्ष विधियों का इस्तेमाल करता है। अप्रत्यक्ष विधियाँ वे विधियाँ होती हैं, जिन्हें व्यक्ति अचेतन रूप से अपनाता है। तनाव से उत्पन्न मानसिक पीड़ा अथवा दुखद अनुभूतियों से बचने के लिए अपनाए जाने वाले इन उपायों को "रक्षा युक्तियाँ" (Defense Mechanism) कहा जाता है।

रक्षा युक्तियाँ हमारी वैयक्तिक, पारिवारिक व सामाजिक समस्याओं के कारण जन्म लेती हैं। जब व्यक्ति प्रत्यक्ष रूप से अपनी उपरोक्त समस्याओं को दूर करने में स्वयं को असफ़ल महसूस करता है तो वह अनजाने में अपने अहं को बचाने के लिए या स्वयं को वातावरण में समायोजित करने के लिए इन अप्रत्यक्ष विधियों का उपयोग करता है।

ये रक्षा युक्तियाँ अचेतन मन के द्वारा स्वत: होती रहती हैं, जिनका व्यक्ति को प्राय: ज्ञान नहीं हो पाता है। ये व्यक्ति द्वारा संतोषजनक समायोजन प्राप्त करने तथा मानसिक द्वंद्व को दूर करने का प्रयास करती हैं। इन युक्तियों का प्रयोग व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में प्रचुरता से करता है। रक्षा युक्तियाँ कई तरीके की होती हैं, जैसे — दिवास्वप्न, विस्थापन, दमन, युक्तिकरण इत्यादि।

वर्तमान समय में प्राथमिक शिक्षक भी स्वयं को वातावरण में समायोजित करने के लिए रक्षा युक्तियों का अचेतन रूप से उपयोग करते हैं जिनके कुछ उदाहरण निम्न हैं —

> जैसे अगर किसी उच्चतर शिक्षा स्तर वाले अध्यापक को कोई ऊँची नौकरी नहीं मिल पाती और उसे न चाहते हुए भी जब प्राथमिक शिक्षक बनना पड़ता है, तो वह स्वयं को समझाने के लिए/स्वयं के अहं को बचाने के लिए दूसरों से यह कहने लगता है कि, "अच्छा हुआ मेरी उस जगह नौकरी नहीं लगी, वहाँ तो थोड़े से ज़्यादा पैसे के लिए पूरे दिन काम करना पड़ता, यहाँ थोड़े कम पैसे ज़रूर हैं, पर आराम बहुत है, हमें तो ऐसी ही नौकरी चाहिए थी।" यहाँ पर वह शिक्षक अचेतन रूप से रक्षा युक्तियों के "युक्तिकरण" (rationalisation) प्रकार का उपयोग कर रहा है।

इस प्रकार से जब हम आगे देखते हैं तो पाते हैं कि बहुत से प्राथमिक शिक्षक जो अपनी नौकरी से प्रसन्न नहीं होते हैं, वे दिवास्वप्न या दमन जैसी रक्षा युक्तियों का इस्तेमाल करते हैं।

दिवास्वप्न में वे खुली आँखों से ही सपने देखने लगते हैं कि उन्हें अपनी योग्यता के अनुसार बहुत

Chapters- PS-April 2016.indd 20 27-07-2017 PM 12:51:57

अच्छी नौकरी मिल गई है, जिसमें बहुत आराम है तथा जिनका वास्तविक ज़िंदगी में अभाव है।

वहीं, शिक्षक जब दमन रक्षा युक्ति का प्रयोग करता है तो वह यह सोचता है कि मेरे भाग्य में यही नौकरी थी इस प्रकार वह अपनी इस असंतुष्टि को अपने अंदर ही दबा देता है।

इसी शृंखला में जब हम आगे बढ़ें तो पाते हैं कि जब कोई प्राथमिक शिक्षक विस्थापन रक्षा युक्ति का प्रयोग करता है तो वह अपनी कुंठा/चिड़चिड़ापन/असंतुष्टि तथा तमाम नकारात्मक प्रवृत्तियों को अपने विद्यार्थियों को बेवजह दंड देकर डाँट-फटकार कर, गुस्सा करके निकालने की कोशिश करता है।

इस तरीके से और भी अनेक उदाहरण हमें समाज में देखने को मिलते हैं, जो प्राथमिक शिक्षक स्वयं के अहं को बचाने के लिए इस्तेमाल करते हैं।

प्रभाव

अगर रक्षा युक्तियों के प्रभाव की विवेचना करें तो उसका अस्थायी उपयोग (temporary use) तो व्यक्ति के लिए काफी लाभदायक है। अगर व्यक्ति इन रक्षा युक्तियों पर आश्रित ही हो जाए तो इसका दीर्घकालिक प्रभाव (long-term effect) काफी नकारात्मक हो सकता है।

अतः व्यक्ति को अपने आप को समायोजित करने के लिए इनका उपयोग कम से कम मात्रा में करना चाहिए।

संदर्भ

गुप्ता, एस.पी. और अलका गुप्ता. 2014. *उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान सिद्धांत एवं व्यवहार*. शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद.

भटनागर, सुरेश और अनामिका सक्सेना. 2010. *एडवांस एजुकेशनल साइकॉलोजी*. आर. लाल बुक डिपो, नियर गवर्मेंट इंटर कॉलेज. बेगम ब्रिज रोड, मेरठ.

र्‌यान्स, डी.जी. 1960. *कैरेक्टरिस्टिक्स ऑफ टीचर्स*. वॉशिंगटन, डी.सी. अमेरिकन काउंसिल ऑन एजुकेशन. ऑनलाइन 05/01/17 को पढ़ा गया।

शामरी, ए.आई. और थाहब नायफ. 1425. ए.एच.एच. मैनेजरियल एण्ड टेक्निकल प्रोब्लम्स फेस्ड बॉय गर्ल स्कूल प्रिंसिपल्स एट हेड डिस्ट्रिक्ट एज़ परसीवड बाय एजुकेशनल सुपरवाइज़र एण्ड प्रिंसिपल्स. मास्टर थीसिस. फैकल्टी ऑफ एजुकेशन, किंग साउद युनिवर्सिटी. के.एस.ए.

सारस्वत, मालती और एस.एल. गौतम. *भारतीय शिक्षा का विकास एवं सामयिक समस्याएँ*. आलोक प्रकाशन, लखनऊ, इलाहाबाद.

Chapters- PS-April 2016.indd 21 27-07-2017 PM 12:51:57